विष्णु जी की आरती (Jagdish Ji Ki Aarti) pdf

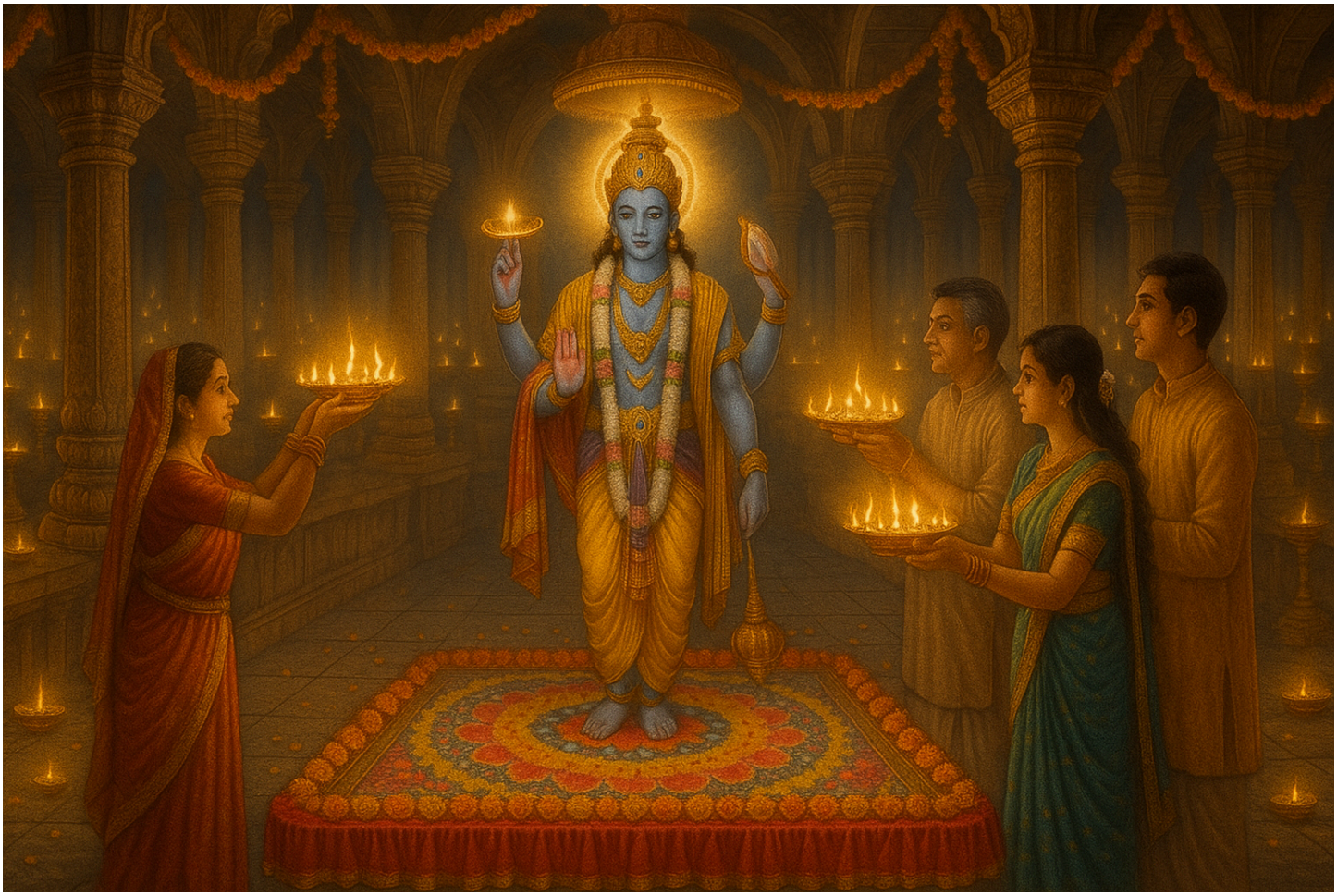

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट,
क्षण में दूर करे॥

ॐ जय जगदीश हरे॥

जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का,
स्वामी दुख बिनसे मन का।
सुख संपत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥

ॐ जय जगदीश हरे॥

माता पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी,
स्वामी शरण गहूं मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी॥

ॐ जय जगदीश हरे॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी,
स्वामी तुम अंतर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥

ॐ जय जगदीश हरे॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता,
स्वामी तुम पालनकर्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता॥

ॐ जय जगदीश हरे॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति,
स्वामी सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥

ॐ जय जगदीश हरे॥

दीन बंधु दुख हरता, तुम ठाकुर मेरे,
स्वामी तुम ठाकुर मेरे।
करुणा हस्त उठाओ, द्वार पद तेरे॥

ॐ जय जगदीश हरे॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा,
स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतान की सेवा॥

ॐ जय जगदीश हरे॥

तन-मन-धन और संपति, सब कुछ है तेरा,
स्वामी सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा॥

ॐ जय जगदीश हरे॥

श्री जगदीश जी की आरती, जो कोई नर गावे,
स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावे॥

ॐ जय जगदीश हरे॥

www.festivalhindu.com